आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
डॉ.विजया वारद • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • पांडुरंग नाडकर्णा • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य •गोपाल सत्पुरे

छायाचित्र -१,२,३५ विजयकुमार बैले, ३६स्थानीय फोटोग्राफर

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफिक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय -	सुशासन के मायने	५
आंतर भारती - १	तुका म्हणे	८
काव्य भारती - १	मेरे घर में...	९
आंतर भारती - २	महात्मा बसवेश्वर वचन	१०
आंतर भारती - ३	तिरुवल्लुवर वाणी	११
काव्य भारती - २	पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल	११
विशेष आलेख - १	लोक शिक्षण द्वारा भ्रष्टाचार निवारण	१२
श्रद्धांजली - १	डॉ.चंदूलाल दुबेजी का स्वर्गवास	१५
श्रद्धांजली - २	सुधा वर्दे - खलखल करता झरना	१६
श्रद्धांजली - ३	सहवेदना - परीट गुरूजी	१७
समाचार भारती -१	उदगीर (महा.) में आन्तर भारती बाल आनन्द महोत्सव	१८
कथा भारती - १	मौत के बाद	१९
समाचार भारती -२	आंतर भारती द्वारा आयोजित पूर्वी भारत दर्शन	२५
समाचार भारती -३	अब महिलाएँ अस्मिता की लड़ाई लडें -राजूरा, जि.अमरावती	२७
समाचार भारती -४	डा.नीलिमा आन्तर भारती उज्जैन की अध्यक्ष बनीं	२९
समाचार भारती -५	किनवट में : छुट्टियों में ज्ञानार्जन	३०
समाचार भारती -६	गोइन्का पुरस्कार समारोह एवं सम्मान समारोह संपन्न	३१
विशेष आलेख - २	मनुष्य बनानेवाला मनुष्य - यदुनाथ थत्ते	३२

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com
लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संपादकीय... सुशासन के मायने

वर्तमान सरकार ने अपराध रहित व भ्रष्टाचार-मुक्त सुशासन को कायम करने की घोषणा कई संदर्भों में की है और ऐसी व्यवस्था को स्थापित करने में अपनी प्रतिबद्धता माननीय प्रधानमंत्री जी समय-समय पर जता रहे हैं और अपनी टीम को सचेत करते हुए आवश्यक दिशा-निर्देश भी जारी कर रहे हैं, ऐसा संकेत अखबारों की रिपोर्टों से मिल रहा है. नई सरकारी की ये पहल निश्चय ही स्वागत योग्य हैं. दिए गए आश्वसनों, की गई घोषणाओं तथा शुरू की गई कार्रवाइयों, पहलुओं के परिणाम लक्ष्य-समूह तक सुलभ हो पाना सुनिश्चित करना भी सरकार का दायित्व है. इसके लिए एक ऐसी आदर्श व्यवस्था बनाने की ज़रूरत है जिसमें पारदर्शिता हो और उसकी देश की जनता के प्रति जवाबदेही भी हो तथा वह सेवा के मूलमंत्र से आगे बढ़ने की चेतना से ओत-प्रोत हो.

न्याय, शांति, सद्भाव, सुरक्षा एवं समन्वित विकास के पनपने से सुशासन की परिकल्पना साकार हो पाती है. इन सभी आयामों, पहलुओं को सुनिश्चित करने की व्यवस्थाएं अपनी जगह हैं, मगर शासन द्वारा जन सेवा के बुनियादी ढांचे व उद्देश्यों, मूलभावनाओं में ईमानदारी, निष्ठा एवं प्रतिबद्धता की कमी से एक तरह से हर स्तर पर व्यापारिक ढांचों का पनपना शुरू हो चुका था. दूसरी तरफ़ मनोरंजन के नाम से अप-संस्कृति परोसते हुए असंख्य मीडिया चैनल भोगवादी संस्कृति अनाचार, अत्याचार, मांस, अपरिमित मदिरा, उन्मुक्त मैथुन पर बल देने वाली भोगवादी संस्कृति पर बल देते हुए उपास्थित हैं. यह समाज का एक दर्पण है या समाज के लिए एक दर्शन है, इस पर कोई वाद-संवाद होने की चेतना भी समाप्त होती नज़र आती है, ऐसे में सुधारवादी दृष्टि से काम करने वाले सुयोग्य शासकों के सुशासन से ही उम्मीद रखी जा सकती है कि किसी हद तक समाज में भ्रष्टता, अपराध के माहौल में कमी हो सके एक आदर्श व्यवस्था की तरफ़ हम आगे बढ़ सकें.

दरअसल, सत्ता की भूख व अधिकार की लालसा से मदोन्मत्त कुछ पीढ़ियाँ व इनके आड़ में पनपनेवाली कई भ्रष्ट टोलियाँ ही देश में भ्रष्ट शासन-साम्राज्य की नींव डालने के लिए जिम्मेदार हैं. भोगवादी संस्कृति के पनपने में और इसको बल देते हुए पर स्तर पर एक ऐसा व्यापारिक मॉडल तैयार हो गया है कि इसे कहीं वैश्वीकरण के प्रभाव के रूप में, उपभोक्ता संस्कृति के परिणाम के रूप में गिनने के बहाने बनाए जा रहे थे.

उक्त चर्चित कई कारणों से भ्रष्टाचार कई रूपों में मुँह बाए खड़ा है जो औसत जन के जीवन को दुर्बर बना रहा है, कई लोगों के जीवन से खिलवाड़ हो रहा है.

कतिपय लोगों के लिए बुनियादी जरूरतों के लिए तरसना पड़ा रहा है. केंद्र व राज्य सरकारों की असंख्य योजनाओं के बावजूद कई मासूम बच्चे मज़दूर बन तड़प रहे हैं, कई सड़कों पर ही दिन-रात व्यतीत करने के लिए मझबूर हो रहे हैं. इन सब कारणों के विश्लेषण से एक मुद्दे के रूप में भ्रष्टाचार भी ज़रूर नज़र आएगा. भ्रष्टाचार केवल घूसखोरी के रूप में ही नहीं, समय पर कोई सेवा न देने के रूप में भी उपस्थित है. समय पर सेवाएं नहीं देना, लापरवाही, प्रक्रिया को जटिल से जटिलतम बनाते जाना, निर्णय न लेना, हीन भावना दिखाना, भय व आतंक का सृजन करना, कूट नीतक चालों को अपनाना, व्यापारिक दृष्टि, अधिकार का गर्व, जीवन में भोगवादी स्वरूप में दिनों-दिन बढ़त, सेवा के लिए प्रत्युपकार की चाह व मांग, सेवा के लिए धन की मांग आदि कई रूप में भ्रष्टाचार फैल चुका है. हो सकता है इन तमाम रूपों को भ्रष्टाचार की संज्ञा देने से सभी की सहमति न हो, मगर ये सब भ्रष्टाचार के भव्य पंथ हैं. सरकारी नीतियों के तहत कई विभागों में विभिन्न सेवाओं के लिए नागरिक चार्टर पहले से तैयार हैं, मगर कई जगह इसकी बड़ी लापरवाही नज़र आती है. और तो कई ऐसे विभाग भी हैं जिनके प्रधान आज तक इसकी ज़रूरत भी नहीं महसूस कर रहे हैं. सबसे पहले सभी मंत्रालयों, विभागों, प्रतिष्ठानों, उपक्रमों आदि से संबंधित विभिन्न सेवाओं के लिए समय-निर्धारित करना और प्रबल व मान्य कारण के बिना सेवाएं देने में उपेक्षा हो तो उसके लिए जिम्मेदार अधिकारी वर्ग पर कठिन कार्रवाई सुनिश्चित हो जानी चाहिए. सरकार के आंतरिक और बाह्य सभी तंत्रों के अंतर्गत सभी सेवाओं के लिए लागू हो, यह ज़रूरी है. इसी तरह के मानक न्यायिक व्यवस्था को भी अपनाने की ज़रूरत है. न्याय की समयबद्धता को प्रभावित करने वाले कई कारक हो सकते हैं और इसकी कई सीमाएँ भी हो सकती हैं मगर सच्चाई यह है कि कई स्तरों पर पनप रहे भ्रष्टाचार से ही न्यायिक प्रक्रिया ही प्रभावित हो रही है. इसमें परिवर्तन भी सुशासन का एक अनिवार्य आयाम है. दुर्भाग्य से कई कारणों से भारत में न्याय के लिए सालों, कई संदर्भों में आजीवन भी तरस ने के लिए कई लोगों को विवश होना पड़ रहा है. यह भी भ्रष्ट तंत्र के लिए वरदान साबित हो रहा है. ऐसी स्थिति भी पैदा हो रही है कि सत्ताधारी वर्ग जिस किसी के विरुद्ध जिस रूप में चाहे अन्याय करने में बेहिचक आगे बढ़ने की परंपरा तक चल पड़ी है.

तथाकथित भ्रष्टता से मुक्ति के उपायों में ई-शासन की परिकल्पना भी कई देशों में की जा रही है. भारत सरकार भी शीघ्रातिशीघ्र देश भर में एक ऐसी व्यवस्था को लागू करें जिसमें जनता को इन्सान के रूप में आदरपूर्ण जीवन जीने का हक मिल सके और ज़रूरी सेवाओं के लिए उन्हें कोई कठिनाई न हो, और अनपेक्षित लंबे इंतजार की जगह समयबद्ध न्यायबद्ध सेवाएं सुलभ होना सुनिश्चित हो जाएं.

विभिन्न सेवाओं को ई-शासन के तहत लाने के कई उदाहरण कई विभागों, राज्यों के मिल जाते हैं, मगर इनकी सफलता या सार्थकता इसी बात पर निर्भर हे कि वे बेमतलब के बनाए गए नियमों के तहत काम कर रहे हैं या गतिशील सेवा शर्तों के आधार पर चल रही हैं. सीमित स्तर पर ई-शासन के बावजूद कई रूपों में पनप रहे भ्रष्टाचार पर रोक लगाने के लिए सेवाओं की मांग को सरल से सरलतम बनाकर इसके लिए मांग दर्ज करने के क्रम में इलैक्ट्रॉनिक प्रणालियों, उपकरणों की व्यवस्था करते हुए निश्चित समयावधि में अपेक्षित सेवा उपलब्ध हो जाना सुनिश्चित हो जाए. अधिकांश सेवाएं एक ही खिड़की से सुलभ हो जाए व अधिकांश संदर्भों के लिए ऑनलाइन पर स्व-सेवा आधारित व्यवस्था बन जाए.

डिजिटलीकरण की प्रक्रिया अति तीव्र गति से शुरू हो जाए और सभी तरह की सेवाओं सीमित प्रमाणों की मांग की जाए. सभी तरह के प्रमाणीकर व प्रमाणपत्रों की जारी व अभिरक्षण की सुदृढ़, सुरक्षित व पारदर्शी डिजिटल व्यवस्था स्थापित हो जाए. विविध उद्देशों के लिए अलग-अलग पहचान संख्याओं की जगह एक आधारभूत संख्या व बयोमेट्रिक आधारित व्यवस्था से पहचान की प्रक्रिया शुरू हो जाए. सभी उद्देशों के लिए कई तरह के प्रमाण लेकर कई विभागों में चक्कर काटते रहने के लिए विवश होने की जगह एक आधारभूत पहचान संख्या हो जिसके माध्यम से सारी सेवाएँ सुलभ हो जाएं. इसके लिए चाहें तो वर्तमान में जो आधार कार्ड जारी हुए हैं जिसमें विशिष्ट पहचान संख्या जारी करने के बहाने जो भी आंकडें व सूचनाएँ एकत्रिक की गई हैं एवं की जा रही हैं, उन्हें सही रूप में जांच व सहेज कर प्रभावी ढंग से इस्तेमान करते हुए सेवा-व्यवस्था को सुदृढ़ व कारगर बनाने की ज़रूरत है. हर तरह के व्यवहार को इसके दायरे में लाने की व्यवस्था हो तो बेनामी खातें समाप्त होने की संभावना होगी. यह भी ज़रूरी है कि सभी सेवाओं के लिए व्यापारिक प्रारूप की जगह सेवा के प्रारूप को ही अपनाया जाना चाहिए. कई रूपों में कर वसूली व इसके लेखे-जोखे के लिए बड़ी टोली को पालने की जगह आधारभूत, पारदर्शी व अनिवार्य कर कटौती या वसूली की व्यवस्था कायम हो.

हर स्तर पर नेता व अधिकारी वर्ग सत्ता के गर्व की जगह सेवा की विनम्रता अपनाएँ, व्यापारिक ढांचे की जगह सेवा के ढांचे को अपनाएं, इसी तरह की मानसिकता का हर स्तर पर पनपने से सरकार जो भी पहल करें वह सफल हो सकती है. आशा है, नई सरकार कारगर नई व्यवस्था स्थापित कर भ्रष्टाचार मुक्त व्यवस्था, अपराधरहित समाज के विकास के लिए अपेक्षित कदम निष्ठापूर्वक उठाकर शीघ्र ही सुशासन को साकार बनाने के लिए कदम उठाएगी.

डॉ. सी. जय शंकर बाबु

आंतर भारती - १

तुकाम्हणे

भिक्षापात्र अवलंबणे

भिक्षापात्र अवलंबणे । जळो जिणें लाजिरवाणें
ऐसि यासी नारायणें । उपेक्षीजे सर्वथा ।।१।।
देवापायीं नाहीं भाव । भक्ति वरीवरी वाव ।
समर्पिला जीव । नाहीं तो व्यभिचार ।।२।।
जगा घालावें सांकडें । दीन होऊनि बापुडें ।
हेंचि अभाग्य रोकडें । मूळ अविश्वास ।।३।।
काय न करी विश्वंभर । सत्य करिता निर्धार
तुका म्हणे सार । दृढ पाय धरावे ।।४।।

हिन्दी भावानुवाद :

भीख माँग जीना, क्या जीना

पुराण-पोथी-बाँच-बाँचकर । भिक्षा जो माँगे है घर-घर ।
आग लगे ऐसे जीवन को । नहीं है प्रिय वह परमेश्वर को ।।१।।
नहीं भाव है मन में प्रभु का । भाव दिखावे यदि ऊपर का ।
नहीं समर्पण है प्राणों का । है तब कर्म यह दुराचरण का ।।२।।
जग के आगे कर फैलाना । हो लाचार दीन घिघियाना ।
यह तो निपट अभाग्य है नाना । कारण है अश्रद्ध-भावना ।।३।।
वह विश्वंभर सबको देता । सत्य कामना पूरी करता ।
तुका कहे (तू) कल्याण चाहता-उसके चरणों में रख माथा ।।४।।

हिन्दी : प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
परिमल २८/८१, विद्या नगर, उस्मानाबाद (महा.).

English Translation

Living by begging is indeed shameful
Bhikshaapaatra awalambanen

Living by begging is indeed shameful.
Lord Narayana does not take note of that.
Putting up a show of prayer without surrendering,
And without any devotion to the Lord,
Can only be termed as prostitution.

Those who beg for money in order to satisfy their own lust.
And have no faith in the Lord are most unfortunate.

Says TUKA, the secret is to hold on
to the sacred feet of the Lord, with all your heart,
And the Lord of the Universe will bless you with all your needs.

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

काव्य-भारती-१

मेरे घर में...

- प्रेमा कुलकर्णी

मेरे घर में तुम्हारा अस्तित्व ऐसा हो ।
मैं जहाँ ''बैठो'' कहूँ - वहीं बैठो,
''उठो'' कहने पर उठो ।।
बच्चों का तथा मेरा सब काम तुम्ही करो ।
पर सब कुछ करते समय,
तुम्हारे माथे पर तेवडियों का जाल न हो ।।
अर्थोयार्जन के लिए तुम भी थोडा बाहर जाओ ।
पर इधर उधर न देखते हुए,
नीचे नजर करके जाओ और नीचे ही देखते आओ ।
काम का प्राप्त पारिश्रमिक ।
वह भी पूरा मुझे ही दो,
पर मेरे खर्चे का कभी जिक्र न करना ।।
मेरे बाहर से आने के पहले तुम घर में रहो ।
शिकायत न करते हुए किसी भी प्रकार की,
तुम सदा प्रसन्न चेहरे से मेरा स्वागत करो ।।

मराठी से अनुवाद - मधुश्री आर्य

आंतर भारती - २

महात्मा बसवेश्वर वचन

- डॉ.इरेश स्वामी

मूळ कन्नड वचन :

शास्त्र घनवेंबेने ? कर्मव भजिसुत्ति दे
वेद घन वेंबेने ? प्राणिवधे हेळुत्तिदे
स्मृति घन वेंबेने ? मुंदिहुदसुत्ति दे
अल्लेल्लियू नीविल्लद कारण
त्रिविध दासोहदल्लिल्लदे
काणबारदु कूडल संगमदेव

हिन्दी काव्यानुवाद :

शास्त्र श्रेष्ठ है ? कर्म को महत्व देता है
वेद श्रेष्ठ है ? प्राणि हिंसा कहता है
स्मृति श्रेष्ठ है ? वही वही बात करती है
वहाँ पर आपके न होने के कारण
त्रिविध दासोह (तन-मन-धन) न होने के कारण
आपके दर्शन नहीं होते कूडलसंगम देव.

सारांश : शास्त्र वेद स्मृति के माध्यम से ईश्वर तक नहीं पहुँच पाता कोई ! क्योंकि वे ईश्वर को छोड बाकी की बातों को महत्व देते हैं. ईश्वर को छोड व्यर्थ की चर्चा बेकार है. ईश्वर के आस्तित्व के प्रति निष्ठा, समर्पण का भाव भक्त को ईश्वर तक पहुँचाता है.

तात्पर्य : भक्ति भाव से ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है.

प्रा.डॉ.इरेश सदाशिव स्वामी
'विद्या', १२, ब्रह्मचैतन्य नगर, बिजापुर रस्ता, सोलापुर-४१३००४
फोन ०२१७-२३४२१९४ मो. ०९३७१०९९५००

धारावाहिक - २१

तिरुक्कुरल तिरुवल्लुवर वाणी

तमिल मूल - संत तिरुवल्लुवर

देवनागरी लिप्यंतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद - डॉ. सी. जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)
इल्लऱवियल् (गृहस्थ-धर्म)
अध्याय ५. वाळ्क्कैत्तुणै नलम् (सहधर्मिणी के गुण)

चिऱैकाक्कुङ् काप्पुएवन् शेय्युम् महळिर्
निऱै काक्कुङ् काप्पे तलै । (कुरल - ५७)

पहरा ही क्यों ?

स्त्री करें शील रक्षा

अपने आप।

भावार्थ - प्रतिबंध लगाकर किसी के द्वारा शील रक्षण ही क्यों ? स्त्री अपने आप इंद्रिय निग्रह व दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ अपने सतीत्व की रक्षा करें।

पेट्रान् पेऱ्न्पेरुवर पेण्डिर् पेरुंचिऱप्पु
पुत्तेळिर् वाळुम् उलहु । (कुरल - ५८)

निज पति से
प्रीतिकर; स्त्री होती
स्वर्ग की स्वामी ।

भावार्थ - अपने ही पति से प्रीति करनेवाली नारी स्वर्ग लोक में यश पाने की अधिकारिणी होती है ।

काव्य-भारती-२

धारावाहिक - ३०

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

-टी.ई.एस. राघवन

कोडैकनाल (तमिलनाडु)

कोडैकनाल की झील देती है आनंद ।
नौकाविहार का, पथिक लेते हैं आनंद ।।
यहाँ भौतिकी शोधकृति होती है दिनरात ।
खगोलिकी कारज खोज, वर्धित है दिनरात ।।
पिलर राक्स' पिकनिक स्थान घोषित निस्संदेह ।

देख वहाँ की गुफ़ाएँ रोमांचित है देह ।
बेरीजाम' झील सलिल सुखदायक कहलाय ।
कैसकेड' झरना सलिल, मेगहरी समझाय ।।
कोडै' से कुछ दूर पर, पलनी विराजमान ।
कार्तिक का मंदिर यहाँ, लखने लायक स्थान ।।

- १, हनुमंतरायन मंदिर गली, ट्रिप्लिकेन, चेन्नै - ६०० ००५

विशेष आलेख-१

लोक शिक्षण द्वारा भ्रष्टाचार निवारण

- न्या.चंद्रशेखर धर्माधिकारी

(महात्मा गांधी ने कहा था आर्थिक लाभ की एकांगी खोज, जो नैतिकता का कुछ भी खयाल रखे बिना की जाती है, ईश्वरी कानून के विरूद्ध है. इस देश में पैसा सिर्फ विनियोग का साधन नहीं है, उसे समाज को भ्रष्ट करने के लिये, इन्सानों को खरीदने के लिये उपयोग में लाया जाता है. लोकतंत्र की उखडती सासों को जिन्दा रखने के लिए आज भ्रष्टाचार को माध्यम बनाया जा रहा है. दान, सेवा और पुण्य के छद्मवेश में भ्रष्टाचार समाज में प्रतिष्ठा पाने की जुगत में है. ऐसे में उपाय क्या है ? प्रस्तुत है लोक शिक्षण के माध्यम से भ्रष्टाचार निवारण के उपाय को बताता प्रसिद्ध गाँधीविद् श्री चन्द्रशेखर धर्माधिकारी का यह लेख - सम्पादक)

एक अंगेज लेखक ने लिखा है, 'हिन्दुस्तान का निवासी सम्पूर्ण धार्मिक है, वह सभी धार्मिक व्यवहार मन से करता है. वह गंगा में धर्म के कारण नहाता है, काशी विश्वनाथ के दर्शन भी धार्मिक भावना से करता है, प्रसाद और तीर्थयात्रा भी धार्मिक भावना से करता है और पाप भी धार्मिक वृत्ति से करता है'.

वह दो के विचारों पर विश्वास करता है - एक व्यक्तिगत और दूसरा सार्वजनिक. वह धर्म और नैतिकता के नाम पर व्यक्तिगत स्वच्छता और सार्वजनिक गंदगी या विभाजित जीवन जीता है. जुआ, ज्योतिष, सट्टा, सौदा और लॉटरी पर उसको विश्वास है. मंदिर भगवान के नाम से नहीं, बनानेवाले दानदाता के नाम से पहचाने जाते हैं. भगवान के दर्शन जल्दी मिले इसके लिये कहीं कहीं रिश्वत भी देनी पडती है. दर्शन के भी भाव होते हैं. क्रान्ति का सूत्र कि पाप-पुण्य और व्यसन का व्यापार नहीं होना चाहिये. हमने उन्हें बाजार में ही नहीं काले बाजार में भी उतारा है. हमारी संस्कृति मच्छरदानी की है. मच्छर न काटे इसके लिये जो मच्छरदानी में सोते हैं, वे वह नहीं जानते कि इससे मच्छर नहीं मरते जहां मच्छर पैदा होते है वहां दवा डालकर उनकी उत्पत्ति को रोकना पडता है. बीजों का ही नाश करना पडता है. समाज परिवर्तन की राह देखना गलत है, क्योंकि समाज-परिवर्तन के सारे काम विशिष्ट व्यक्तियों ने ही किये हैं. बाद में समाज ने उसे

अपनाया है. टैक्सचोर, गुनहगार, भ्रष्टाचारी इनकी प्रतिष्ठा न बढे, उनें स्थान न मिले, इसकी शुरूआत अपने से ही करनी होती है वरना दूसरों को ब्रह्मज्ञान बताने वाला जड पाषाण रह जायेगा.

जैसा काम भ्रष्ट लोग करते हैं, उसे भ्रष्टाचार कहते हैं और उनका समाज पर प्रभाव नहीं पडता, ऐसा पहले माना जाता था. लेकिन आज तो वह शिष्टाचार बन गया है. हर राक्षस की शक्ति भगवान का दिया हुआ वरदान होती है और हर भ्रष्टाचारी का संरक्षण सज्जनों का आधार होता है. सज्जन भी अपना काम निकालने के लिये भ्रष्ट मार्ग का सहारा लेते है, भ्रष्टाचारियों की मदद लेते हैं. फिर भ्रष्टाचार को गालियां भी देते हैं. आज भ्रष्टाचार ने हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमें प्रभावित किया है. आज कार्य क्षमता और कार्य कुशलता का अर्थ हुआ काम टालने की कला या होशियारी. कम से कम काम और अधिक से अधिक दाम, इसी को शासकीय नौकरी कहते है. सरकारी नौकरी में निहित लोगों को काम करने पर अलग से विदाई (भेंट) की आकांक्षा रहती है. भूमिका ऐसी है कि 'लोकसेवा' या लोगों का काम करना सेवा या सरकारी काम नहीं है. वेतन सरकारी काम के लिये मिलता है, लोकसेवा या लोगों की सेवा के लिये नहीं मिलता. इसलिए जिस किसी का काम हम करते है, उसके लिये उनकी ओर से 'कुछ' लेना गलत या अनैतिक प्रतीत नहीं होता. विनोबाजी की भाषा में 'भ्रष्टाचार शिष्टाचार हो गया है और भ्रष्टाचार की व्यारव्या भी बदल गई है. जो रिश्वत लेकर भी काम नहीं करता, वहीं भ्रष्टाचारी माना जाता है. शेष सब 'सदाचारी' ही है.

यह कैसा समाज है, जहां सदाचारी और ईमानदारी होना विशिष्ट तथा असामान्य गुण माना जाता है. कानून के क्षेत्र में अच्छे काम के लिये ईनाम नहीं मिलता, क्योंकि वह तो सामान्य नियम है, सभी से अपेक्षित है. बुरे काम के लिये सजा मिलती है. आज मैं ईमानदार हूं, सदाचारी हूं, इसके ढोल बजाये जा रहे है. जिस समाज में ईमानदार होना, सामान्य नहीं होता, वहां दम्भ और भ्रष्टाचार सामान्य नियम नहीं होता बल्कि अधिकतर लोग भ्रष्टाचारी ही होते हैं. अगर यह सत्य होगा तो सारा देश भ्रष्टाचारियों या गुनहगारों का नहीं हो सकता. इंग्लैंड में पुरुष के अनैसर्गिक यौन सम्बन्धों को गुनाह नहीं माना जाता है. अतः कानून में से उन धाराओं को रद्द कर दिया गया है. वैसा हमारे देश में भ्रष्टाचार को कानूनी अधिकार दे देना चाहिये. लेकिन यह सही नहीं हैं.

सारा शहर जानता है भ्रष्टाचार कौन करता है, सिर्फ उसका पता न्यायालय को न चले, इसके सबूत न मिलें, इसलिये पुलिस से लेकर सारा समाज कोशिश करता रहता है. भ्रष्टाचार के विशिष्ट सबूत नहीं मिलते, लेकिन हम रोज 'यह जाना माना भ्रष्टाचारी है' ऐसे शब्द का प्रयोग करते है. ऐसी सार्वजनिक आम

भावना का महत्व होना चाहिये. आम आदमी के मन में व्यक्ति के प्रति जो ख्याति या बदनामी होती है, वह अपने आप में काफी नहीं मानी जानी चाहिये, क्योंकि बिना आग का धुआँ नहीं होता. भ्रष्टाचार कोई गवाह रखकर नहीं करता. इसलिये स्नेह सम्मेलन या अन्य कार्यक्रमों में ऐसे इन्सान को बुलाना ही नहीं चाहिये, चाहे वह किना ही बडा दानदाता क्यों न हो. इससे उसे सामाजिक प्रतिष्ठा मिलती है. प्रतिष्ठा कानून का पालन करने वाले की होनी चाहिये. इस देश में पैसा विनियोग का साधन नहीं है, उसे समाज को भ्रष्ट करने के लिये, इन्सानों को खरीदने के लिये उपयोग में लाया जाता है. दान, पूँजीवाद कालाबाजार के रक्षक है, भ्रष्टाचार को प्रतिष्ठा दिलाने का एक साधन है.

भ्रष्टाचार की 'गंगोत्री' राजनीतिक पक्ष है. चुनाव के लिये सभी राजनीतिक पक्ष पैसा इकट्ठा करते है. चुनाव में अपार धनराशि खर्च करना और वोट खरीदना सामान्य रिवाज बन रहा है. मतदाताओं को भ्रष्ट बनाया जाता है. कोई भी पक्ष सत्ता में आये, जयप्रकाश नारायण की भाषा में 'नागनाथ की जगह सापनाथ' को लाने जैसी बात होती है. इसलिये चुनावी प्रक्रिया सम्बन्धी कानून में परिवर्तन तो करना ही पडेगा. हर राजनीतिक दल को अपने ही दल के अन्तर्गत एक स्वतन्त्र न्यायाधिकरण नियुक्त करना चाहिये, जिससे पक्षजन भ्रष्टाचार की शिकायते भेज सकें. इसे न्यायाधीश की सिफारिश कार्य समिति द्वारा अवश्य स्वीकृत किया जाना चाहिये और उसके मुताबिक कार्यवाही होनी चाहिये. वैसे कुछ मामले न्यायाधिकरण तक आये और कुछ लोगों को उल्लेखनीय दण्ड मिला तो उसका दूर तक असर होगा, भले ही संगठन के भीतर सत्ता-संतुलन कुछ गडबडा जाय.

जिन्हें कोई पद प्राप्त हो, उन्हें किसी प्रकार का लाइसेंस या परमिट लेने से रोक दिया जाना चाहिये और जीवनावश्यक वस्तुओं की सलाहकार समितियों की सदस्यता भी उन्हें नहीं मिलनी चाहिये. इतना ही नहीं, उन्हें किसी भी अधिकारी से इन मामलों में सिफारिश करने से भी रोकना चाहिये. उन्हें शिक्षा, संस्था, शराब की दुकाने, शक्कर के कारखाने जैसी संस्थाओं से भी दूर रखना चाहिये. नागरिकों की मुहल्ला सदाचार समितियां बनाकर निगरानी रखनी चाहिये. उसमें ऐसे लोग होने चाहिये जो चुनाव की राजनीति से दूर रहें.

आज आवश्यक है कि भावनाशील युवक-युवतियां भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठायें और कार्यवाही करने का साहस दिखायें. बडे किसान और व्यापारियों के लडके-लडकियां अपने पिता तथा परिवार की जमाखोरी और कालाबाजारी के विरुद्ध, अफसरों के बेटे-बेटियां, मन्त्रियों के लडके-लडकियां अपने पिता के भ्रष्टाचार के विरूद्ध सत्याग्रह करें. ऐसे पैसों पर न जीयें, उनका जीवन में उपयोग न करें. इससे आत्मशुद्धि के द्वारा समाज का वातावरण शुद्ध होने में मदद मिलेगी. विद्यार्थी अपने जीवन से भ्रष्टाचार दूर करने का संकल्प करें. परीक्षा में

चोरी नहीं, पैसे देकर प्रवेश नहीं, बिना टिकट यात्रा नहीं, तोडफोड नहीं, दहेज न तो लें न ही दें. शादी तथा उत्सवों पर खर्च न करें क्योंकि वह भयंकर खर्च राजद्रोह है, भ्रष्टाचार की जननी है. जयप्रकाशजी ने युवकों से कहा था, हर मंच पर भ्रष्टाचार का निषेध करो. आखिर देश की मिट्टी की खाद बनोगे तभी उसमें आजादी के फूल खिलेंगे.

सभी राजनीतिक दलों को एक आचार संहिता बनाकर उसका पालन करना चाहिये. उम्मीदवार नहीं चरित्रवान प्रतिनिधि चुनें जिसे पैसे और सत्ता की कोई लालसा न हो. वह पक्षनिष्ठ कम लोकनिष्ठ अधिक हो. जिस पक्ष में लोकनीति के मूल्य हों, जिसका सदाचार पर ही विश्वास हो, ऐसे पक्ष को मान्यता मिलनी चाहिये. सभी चुनाव एक ही समय में हों. भ्रष्ट लोकप्रतिनिधि को वापस बुलाने का हक जनता को मिलना चाहिये.

आज तो लोकतन्त्र भी नीलाम हो रहा है, क्योंकि संदर्भ पूंजीवाद का है. यह लोकतन्त्र पूंजीवाद का है. यह लोकतंत्र पूंजीवाद की बेटी है. आज के लोकतन्त्र को विनोबाजी ने 'राक्षस-नीति' कहा था. जिला स्तर पर सामंजस्य स्थापित करनेवाली सज्जनों की समितियां हों. जन प्रतिनिधि की पंचायत जैसी विकेन्द्रित व्यवस्था होगी तो नौकरशाही में भी भ्रष्टाचार नहीं रहेगा. जनता का प्रत्यक्ष शासन एवं सरकारी कर्मचारियों के नाम पर जनता तथा उनके द्वारा चुनी गई संस्थाओं का प्रत्यक्ष निरीक्षण और नियन्त्रण होना चाहिये. आज लोकशिक्षण द्वारा भ्रष्टाचार के खिलाफ वातावरण निर्माण करना आवश्यक है.

श्रद्धांजली - १

डॉ.चंदूलाल दुबेजी का स्वर्गवास

गत २४ अप्रैल २०१४ को कर्नाटक के प्रसिद्ध हिन्दी प्रेमी, निष्ठावान एवं प्रमाणिक हिन्दी प्रचारक और कर्नाटक विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ.चंदूलाल दुबेजी का सवर्गवास हो गया है. वे ८९ वर्ष के थे. उन्होंने अपने पीछे पत्नी, दो बेटे और बेटी को छोडा है. १९२६ में धारवाड में उनका जन्म, वही उनका स्कूल एवं कॉलेज की शिक्षा. उसके बाद उच्च शिक्षा सागर में प्राप्त कर बंबई और कोल्हापुर के कॉलेज में हिन्दी का अध्यापन किया. तत्पश्चात् उन्होंने कर्नाटक विश्वविद्याल के हिन्दी विभाग में १९८०-८७ तक अध्यक्ष के रूप में काम किया. वहाँ से सेवा निवृत्त होने के बाद अब तक २७ वर्ष तक दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा में हिन्दी अध्यापन, हिन्दी प्रचार के कार्य में लगे रहे. इस तरह उन्होंने जीवन भर हिन्दी प्रचार-कार्य में अपने को लगाया था. आज उनके व्यक्तित्व एवं हिन्दी प्रेम से प्रभावित कई हिन्दी प्रेमी लोग हिन्दी प्रचार में लगे हुए हैं. इस अवसर पर आन्तर भारती परिवार डॉ.दुबेजी को अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि प्रकट करता है.

श्रद्धांजलि - २

सुधा वर्दे - खलखल करता झरना

- मधुनाशिककर

खलखलनिर्झर झरने जैसी वृत्ति वाली सुधाताई वर्दे ९ अप्रैल २०१४ को लम्बी बीमारी के बाद ८१ वर्ष की आयु में निधन हुआ. भाई वैद्य के कहे अनुसार खलखल बहने वाले झरने जैसा दूसरों के लिए जीने के आनन्द का अनुभव लेनेवाली सुधाताई अर्थात प्रेमपूर्ण व्यक्तित्व का उदाहरण

१४ वर्ष की उम्र से वे राष्ट्र सेवादल में जाने लगी थी. उन्हें नृत्य का शौक था और इसी शौक से राष्ट्र सेवादल के कलापथक में उन्होंने सक्रिय भाग लिया. वसंत बापट, लीलाधर हेगडे, सदानंद वर्दे के साथ उन्होंने महाराष्ट्र दर्शन, भारत दर्शन, आजादी की लडाई, शिवदर्शन जैसे कार्यक्रमों में जनजागृति व लोकशिक्षण का बहुमल्य काम किया. लोक मनोरंजन शिक्षण इसी ध्येय से राष्ट्र सेवादल कलापथक द्वारा लोकशिक्षण तो किया है. पर अपने आनन्दी स्वभाव से कलाकारोंपर सामाजिकता, सजगता, शिक्षा का महत्व, स्त्रीपुरुष समानता, सहजीवन के गहरे संस्कार डाले.

सुधा वर्दे व सदानंद उर्फ अनु वर्दे का सहजीवन सही अर्थ में सहजीवन थे. एक दूसरे को साथ मिली. इसीलिए वे दोनों अपनी इच्छानुसार जीए और समाज की दृष्टी से महत्व के और बडे आदर्शपूर्ण काम कर सके. ''एका झर्याची गोष्ट'' इस आत्मकथन में जीवन के अनुभव बताने वाली छोटी रसीली पुस्तक में सुधाताई ने स्वीकृती दी है. वर्दे सर के जाने के बाद श्रीमती उषा मेहता के आग्रह से यह ''झरा'' हमारे अनुभव में आ रहा है.

सुधाताई महिलाओं के प्रश्नों पर भी काम करती थीं. उन्हें उसके लिए कोकण में बहुत भटकना पडा. बिहार में कुछ समय रहकर वहाँ ''स्त्री संगठन'' बनाया. उन्हें निर्भय बनाया. उडने तैय्यार किया, शक्ति दी. हर साल डेढ दो महीने बिहार के लिए समय निकालती थीं. ऐसा अनेक वर्ष उनके काम चलते थे.

किल्लारी भूकम्प में अनेकों के घर उध्वस्त हो गए. अनेकों के संसार नष्ट हो गए. अनेक बच्चे अनाथ हो गए. उनके लिए राष्ट्र सेवादल के माध्यम से ''आपल घर'' इस संस्था की स्थापना कर इन अनाथ लडके लडकियों को आश्रय दिया. उसके लिए ''नळदुर्ग'' में निवासी शाला शुरू की. प्रमिला दंडवते, मृणाल गोरे, इन के समानांतर सुधाताई ने मुंबई की महिला दक्षता समिती महंगाई प्रतिकार समिति द्वारा स्त्रियों के बडे बडे मोर्चे निकाल कर आंदोलन छेडा.

वर्दे पति पत्नी में सुसंवाद था 'सत्य' इस महत्व पूर्ण जीवन मूल्य उनके जीवन में अवतरित था. दूसरों से इमानदारी से बर्ताव करो और स्वयं से भी प्रामाणिक रह कर जो कुछ कर सकते है वह सर्वस्व उंडेल कर करो-यह संदेश कार्यकर्ताओं को उनके जीवन से मिला. यह उनके पारदर्शी व्यवहार से उनके कार्यकर्ताओं को निरन्तर जाना आना, चर्चा, बैठक और उस समय सबको मिलने वाली स्वतंत्रता की वजह से ''आमचे घर'' दूसरों की अपेक्षा कितने अलग हैं यह हमें सदा ध्यान दिलाता है. ऐसा झेलम उनको लड़की वर्दे-परांजपे कहती है यह सार्थक है.

स्वयं के लिए जीने वालों के संसार में, दूसरों के लिए जीने के आनंद का अनुभव लेनेवाली और वह दूसरों से बांटनेवाले व्यक्ति बहुत कम मिलते है. पवित्र पानी का खलखल बहता झरना अपने ही आनन्द में बहता है, और एकाधा अपरिचित उसके किनारे पर बैठ कर उसके अंजली भर पानी पीकर तृप्ती से नहाता है, पर उस झरने को मैंने बहुत अलौकिक ऐसा कुछ किया है इसकी भनक भी नहीं होती. ऐसे एक झरने जैसा निर्मल आयुष्यवाली ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्त्री सुधाताई वर्दे का नाम अनेकों के होठों पर हमेशा के लिए रहेगा.

सुधाताई को कथामाला कार्यकर्ताओं की तरफ से नम्र अभिवादन

हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य

श्रद्धांजलि - ३

सहवेदना - परीट गुरूजी

राष्ट्र सेवा दल के कार्य के लिए समर्पित न्या.रानडे विद्याप्रसारक मंडल के संस्थापक, विश्वस्त, ज्येष्ठ स्वतंत्रता-सैनिक बा.य.तथा बाबूराव यशवंत परीट (गुरूजी) का बुधवार प्रातः वृद्धावस्था के कारण निधन हो गया. वे ९३ वर्ष के थे.

सेवादल में पूरे समय कार्यकर्ता के रूप में नियमित रूप से ६० वर्ष काम किया. उत्तर भारत में सेवादल आंदोलन चलाने में इनका प्रमुख योगदान था.

साने गुरूजी इनके प्रेरणा स्थान थे. १९३९ में परीट गुरूजी ने सेवादल में प्रवेश किया. कुछ समय नौकरी करने के पश्चात महात्मा गांधी की आवाज में आवाज मिलाकर नौकरी छोड दी और स्वतंत्रता की लडाई में उतरे. ९ अगस्त १९४२ के दिन नासिक शहर में महात्मा गांधी रास्ते पर ब्रिटिशों के विरोध में मोर्चा निकाला. उस समय अंग्रेज अधिकारियोंने जो लाठी चार्ज किया था उसमें जख्मी हो गए थे. तब से परीट गुरूजी ने स्वतंत्रता की लढाई में स्वयं को समर्पित कर दिया.

महाराष्ट्र में सेवा दल का काम करने के बाद परीट गुरुजी उत्तर प्रदेश के राज्यों में मोर्चा ले गये. उनके कार्य को गौरवान्वित करते हुए आगरा के पास की अंग्रेजी स्कूल को बा.य.परीट गुरूजी ऐसा नाम दिया गया.

राष्ट्रसेवा दल के महामंत्री के रूप में २४ वर्ष उन्होंने जिम्मेदारी संभाली. उस समय विनोबा भावे के साथ भूदान आंदोलन में सहभाग लिया. पंढरपुर के मंदिर में सर्वधर्मियों को प्रवेश मिले इसलिए साने गुरूजी के नेतृत्व में जो मोर्चा निकालां गया उसमें भी शामिल थे.

परीट गुरूजी के कार्य की वजह से निफाड तालुका का नाम देशभर में प्रसिद्ध हुआ काम के गौरव स्वरूप उन के नाम की राज्यसभा की सदस्यता के लिए शिफरिश की गई. परन्तु उन्हें मना कर दिया और सामाजिक क्षेत्र में ही काम करने की इच्छा व्यक्त की. पूना विद्यापीठ की ''जीवन साधना'' तथा ''चन्द्रकान्त शहा आन्तर भारती'' पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

साने गुरूजी परिवार के एक ज्येष्ठ नेता को कथामाला की भावपूर्ण श्रद्धांजली.

हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य

समाचार भारती-१

उदगीर (महा.) में आन्तर भारती बाल आनन्द महोत्सव

दि. ४, ५, ६ मई २०१४

श्री गोरक्षण संस्था सोमनाथपुर ता.उदगीर जिल लातूर महा. की ओर से ४, ५, ६ मई को बालोद्यान के एक मई से शुभारम्भ के बाद आन्तर भारती बाल आनन्द महोत्सव आयोजित किया गया था. इसमें लगभग तीन सौ स्थानीय बच्चों ने हस्तकला, कोलाज, चित्रकला, मिट्टीकाम, नृत्य, संगीत, वेशभूषा, बैठे खेल, मैदानी खेल, मेंहदी, कढाई बुनाई, के कला और कौशल से अपनी प्रतिभा के अनुरूप अभिव्यक्ति की. बाल महोत्सव के आयोजन में आन्तर भारती के श्री बालाजी चौहान, श्री विजयकुमार बैले, शेख सलाउद्दीन तथा अजय श्रीवास्तव ने सारी तैयारी की और तीनों दिन बालमहोत्सव का आयोजन किया. इन्ही के विशेष प्रयत्नों से आकर्षक, कलात्मक एवं सुन्दर प्रवेश द्वार भी खडा किया गया था. सहभागी बच्चों ने मुक्त अभिव्यक्ति से आनन्द लाभ प्राप्त किया. (देखिए छायाचित्र पृष्ठ १, २ और ३५ पर)

गोरक्षण की ओर से उसके अध्यक्ष डॉ.आर.एन.लखोटिया, विश्वस्त महादेव नावंदे, श्री सुबोध अंबेसांगे, श्री दीपक बलसूरकर, व राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षक विश्वनाथ मुडपे व अन्यान्य कार्यकर्ताओं ने अच्छा व्यवस्थापन किया व परिसर को आनन्ददाई बनाया.

- प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य

(मातृभूमि स्टडी सर्किल पुरस्कार-२०१२ से सम्मानित मलयालम कहानी 'आफ्टर डेथ' का हिंदी अनुवाद)

मौत के बाद

मूल मलयालम कहानीकार - सुजित कमल
हिंदी अनुवाद - डॉ. सुमित पी.वी.

नये दिन के आठवें घंटे में आलस्य के साथ जिजो अपने पैर से पैर लटकाये आधी नींद में लेटा हुआ था. अचानक पीठ पर गोलाई में गर्मी महसूस होने पर उसने चादर हटाकर देखा.

लीमा थी.

जिजो ने आलस और गुस्से के साथ लीमा को देखा और चादर उठाकर सिर तक ओढ़ कर सीधा लेट गया. अपने दाएं हाथ की कॉफी को मेज पर रखकर लीमा, जिजो की छाती पर अपना सिर सटाया और उसके नाक को जोर से पकड़ी.

चाचा उठिए न, आठ बज गया...

लीमा को उठाकर पलंग के उस पार लिटाकर जिजो ने अपना मोबाइल फोन लेकर की-पैड को चालू किया. फोन साइलेंट मॉड पर था. वेनल के तीन मेसेज और दो मिस्ड कॉल पड़े थे. मेसेज खोलकर देखा.

उठा नहीं?

मलयालम और अंग्रेजी मिश्रित एसएमएस.

लीमा से छुपाकर वेनल को वापस मेसेज करते समय अपने आई-पैड से आंखें न हटाते हुए उसने पूछा.

वेनल आन्टी है क्या?

लीमा का कान पकड़ते हुए अंदर की हंसी को रोक कर गंभीर भाव में जिजो ने पूछा.

तुम्हें आज स्कूल नहीं जाना है?

जाना है लीमा ने जवाब दिया.

तो फिर तैयार क्यों नहीं हो रही हो?

मम्मी इधर नहीं हैं.

कहां गयीं तुम्हारी मम्मी?

वीडियो गेम को रोक कर लीमा ने कहा रूपा आन्टी के फ्लैट गयी हैं. आन्टी के पिता जी का देहांत हो गया है ! पापा और मम्मी अब तक उधर से वापस नहीं लौटे.

जिजो ने अपना फोन उठाकर जीजा को कॉल किया.

मैं उधर आ जाऊं?

नहीं, जरूरत नहीं है.

लीमा का स्कूल है न आज, क्या मैं उसको तैयार कराऊं?

हां. नौ बजे स्कूल बस आएगी. तुम जरा उसको संभालो.

'जी'

आई वांट योर हेल्प. तुम नीचे आते वक्त लीमा का स्कूल बैग, मेरा और जीना का यूनिफार्म और ऑफिस बैग भी लेते आना.

हल्की आवाज में इतना कहकर जीजू ने फोन काट दिया.

गेम खेल रही लीमा को काफी मेहनत कर उठाया. उसके चेहरे पर गेम को पूरा न कर पाने का गुस्सा दिखाई दे रहा था तो भी उस पर गौर न करते हुए जिजो ने उसे यूनिफार्म पहनाया, टाइम-टेबिल के अनुसार किताबें बैग में रखवायीं. साथ-साथ जीजा के कहे अन्य चीज़ों को लेकर फ्लैट को बंद कर बाहर निकला. लीमा को स्कूल बस में बिठाने के बाद जीजा के नंबर पर फोन किया. लेकिन उस तरफ कॉल को काट दिया गया. मेसेज की आवाज सुन कर इनबॉक्स खोला.

जस्ट ए मिनट; वी आर कमिंग.

सीढ़ियां उतर कर आते समय ही दोनों के चेहरे पर देरी होने की झटपटाहट साफ झलक रही थी. जिजो को देखते ही जीजू बैग लेकर पार्किंग स्पेस की ओर गए.

तुमने कार की चाबी नहीं लायी?

जीजू ने पूछा.

अरे! नहीं. स्कूल बस न मिलेगी सोचकर मैंने मोटर साइकिल की चाबी लायी है.

जिजो ने जवाब दिया.

वह तो अच्छा हुआ. इतनी ट्राफिक के बीच में से कार चलाकर कब ऑफिस पहुंच जाऊंगा...?

घड़ी देखकर जवाब का इंतजार न करते हुए जीजा ने ऐसे ही पूछा. कीचेन पर सुनहरे अक्षरों से लिखे जिजो और वेनल के नाम आलस के साथ पढ़ कर किकर से गाड़ी चालू कर बिना किसी भावभेद का एक और सवाल.

यह अभी भी है क्या: मुझे तो लगा था कि उसे नौकरी मिलने पर तो यह गयी होगी.

नहीं. जाने के लिए तैयार हो रही है. जिजो ने कहा.

सिर झुकाकर खड़े भाई का चेहरा ऊपर कर जीना बोलने लगी.

''अब आलसी होकर मत बैठना. जाकर इंटरव्यू के लिए तैयार हो जा! अब यह भी मत कहना कि किसी के अधीन काम नहीं कर सकता. उस तरह जीना बेहद मुश्किल होगा. सब कुछ तुम आगे समझ जाओगे.

जीजा के हेलमेट पहनते समय उनके पास खड़ी हुई दीदी ने कहा.

रवि ने जीएम को फोन कर दिया है और उन्होंने वादा भी किया है.

इसी आलस के कारण खराब हुए वर्षों के बारे में हमेशा की तरह दीदी के सवालों पर बिना कुछ बताए उनकी आंखों में ही देखता रहा और बाद में धीरे से पूछा.

आज छुट्टी नहीं ले सकतीं दीदी?

व्हाय? छुट्टी लेने के लिए यहां क्या हुआ?

आश्चर्य के साथ जवाब.

कुछ नहीं. बगल वाले फ्लैट में मृत्यु होने पर उनकी मदद के लिए रहने के बजाय आप लोग नौकरी के लिए जा रहे हैं; इसीलिए पूछा.

यही तो मैंने पहले कहा था-तुम इस शहर के बारे में धीरे-धीरे समझ जाओगे.

तुम एक बात जानो, रवि के चाचा जी के गुजरने पर भी हम लोगों ने छुट्टी नहीं ली थी. फिर आज! अच्छा हुआ, तुम ने रवि से इस बारे में नहीं पूछा!

ऐसा लगा कि दीदी कोई रहस्य मुझसे बोल रही है.

जिजो आंखें बंद किये बिना दीदी को देखता ही रह गया.

बेटा, शहर में हमारा अपना केवल इंश्योरेन्स है. यहां के लोगों के बारे में तुम आगे समझ जाओगे. बेकार की बातों पर सोचे बिना तुम इंटरव्यू के लिए तैयार हो जाओ.

जिजो कुछ बताये बिना सुनते हुए खड़ा रहा.

सुनो, खाना कमरे में मंगा लेना. फुड कार्ड अलमारी में है. पंच करवा लेना. महीने का अंत है तो हम लोग देर से आयेंगे. एनिवे, गुड लक माई डियर

परीक्षा के दिन जिस तरह कंधे पर हाथ रखकर लीमा को आत्मविश्वास देती हैं उसी ढंग से बताती हुईं जीजा के कंधे को हाथ से पकड़ कर, पैर फूटरेस्ट पर रख कर दीदी मोटर साइकिल पर बैठ गयीं. मोटर साइकिल गेट के हरे सिग्नल को पार कर शहर की भीड़ और उसके बाद उनकी जिन्दगी की ओर तेजी से चली गयी. उनको देखते हुए खड़ा जिजो के कंधे पर हाथ रख कर फ्लैट के सेक्यूरिटी ने पूछा.

''रवि सर का जीजा है न?''

''हां''

''क्या करते हो?''

किसी भी बेरोजगार युवक को असमंजस में डालने वाले इस सवाल के सामने अपनी आंखें पूरी तरह बंद कर जिजो तीसरी मंजिल लक्ष्य कर चला.

फ्लैट पहुंचकर फ्लास्क से गिलास में थोड़ी-सी चाय लेकर अखबार पढ़ने लगा. कल रात चैनलों में बातचीतों के दौरान नेताओं द्वारा कही गयी बातों को क्रमानुसार सजाया गया है. पढ़ते समय ऊबन महसूस हो रही है. अखबार बंद कर उसने वे टू फ्रेंड्स' बेवसाइट को देखते हुए थोड़ी देर बिताया. आलस लगने पर थोड़ा बाहर घूम कर आने के बारे में सोचा. तब लगा बगल के फ्लैट में जाकर मृत व्यक्ति को जरा देख लूं.

मोबाइल को साइलेंट मॉड कर छह-सात सीढ़ियां चढ़कर उस फ्लैट के अंदर

गया तो, उधर अपने ऊपर पड़ी नजरों से जिजो को लगा कि वह किसी इंटरव्यू बोर्ड का सामना कर रहा है. चेहरे पर छायी अपरिचित भाव ने जिजो को दुविधा में डाल दी. अपकर्षता बोध से झुके चेहरे को ऊपर कर कमरे के चारों ओर एक बार नजर दौड़ायीं. एक युवती अपनी गोद पर लैपटॉप रखकर बैठी है. दीवार पर लटकी फोटो से जिजो को लगा वही रूपा है. हाथ में अंग्रेजी पत्रिका पकड़ कर मोबाइल पर बात कर रही है दूसरी युवती. अंदर के कमरे में पसारे गये भीगे कपड़े. आधे से ज्यादा पानी भरा हुआ एक गिलास. कई मोबाइल फोन. चाबी. मेज के बीच में काले रंग का ऐश ट्रे. बाईं ओर दीवार और खिड़की से सटा हुआ एक पलंग पर हल्के पीले रंग की चादर के बीचों बीच लगभग साठ साल के मध्य वयस्क की लाश.

लाश को आदर के साथ नमन कर मुड़ने पर देखा कि रूपा अक्षम होकर अपने लैपटॉप पर किसी वेबसाइट को बार-बार सर्च कर रही है. लेकिन साइट नहीं खुल रहा है. वह अपनी ओर ध्यान नहीं दे रही है समझने पर जिजो थोड़ा नजदीक जाकर लैपटॉप स्क्रीन की ओर झांका.

डब्ल्यु डब्ल्यु डब्ल्यु. आफ्टर डेथ.कॉम

आश्चर्यजनक वेबसाइट! मृत्यु और वेबसाइट के नाम को जोड़ने पर जिजो के मन में कहीं कोई लिंक जुड़ रहा है. उसने मोबाइल पर समय देखा और वापस जेब में ही डाला.

बीच-बीच में कमरे में आ-जा रहे लोगों की ओर कभी सिर उठाकर देखने के अलावा उधर क्या हो रहा है इस पर रूपा बिल्कुल ध्यान नहीं दे रही थी. इंटरनेट कनेक्ट नहीं हो रहा था तो नेट सेटर को बार-बार निकाल कर लगा रही थी, तो भी वह कामयाब नहीं हुई. थोड़ी देर तक सोचता रहा फिर जिजो अपने फ्लैट जाकर लैपटॉप और नेटसेटर लेकर लौट आया, तब भी रूपा अपनी विफल कोशिश जारी रखे हुई थी. जिजो ने अपने लैपटॉप को चालू किया. इंटरनेट कनेक्ट करने के बाद रूपा जिस वेबसाइट को ढूंढ़ रही थी उस साइट का पता टाइप कर लैपटॉप रूपा को देने लगा तो उसके चेहरे का भाव देख कर जिजो खुद सर्च करने लगा. साइट पर लॉगिन कर लैपटॉप का स्क्रीन रूपा की सुविधानुसार ऊंचा कर रखा. उसने जिजो को धन्यवाद कहा. उसके बाद जिजो ने फीचर्स लिंक पर क्लिक किया.

''कल चैटिंग पर मिला था गब्रिएल, कितनी जल्दी वह जिन्दगी से लॉग आउट हो गया!'' मृत्यु के बारे में जानकर उधर पहुंचे कोई आदमी किसी दूसरे से इस तरह कहते हुए फ्लैट के एसोसिएशन रजिस्टर में सहानुभूतिसूचक शब्द लिखकर अपना मोबाइल कान से सटाकर जल्दबाजी में दरवाजा बंद कर बाहर निकला.

फीचर्स लिंक खुलने पर ईसा मसीह को धन्यवाद स्वरूप उसने हवा में क्रॉस का चिह्न खींचा और चूमा. हल्का पर्पल रंग वाले स्क्रीन पर दायीं ओर विस्तृत फीचर्स और बायीं ओर शाखाओं का विवरण दिया है. उसके बीच चार युवतियों द्वारा मदद के लिए हाथ बढ़ाने वाला दृश्य है. रूपा थोड़ा और स्क्रीन के पास आ गयी. विवरणों को पढ़ कर समझने के बाद उसने जिजो से मदद बटन पर दबाने के लिए कहा. बटन दबाने पर आवेदन पत्र के रूप में एक पेज खुला. आवेदक का नाम, मृत व्यक्ति से संबंधित विवरण, शारीरिक नाप-तौल, मृतक-क्रिया संबंधी जानकारी, फ्लैट का रास्ता, फ्लैट नंबर इत्यादि तथा जीवन वृत्त को रूपा के निर्देशानुसार जिजो ने टाइप किया. आखिर में ''आई एग्री योर टर्म्स एंड कंडीशन्स' वाला सत्यापन के साथ आवेदन पत्र को रूपा की अनुमति के साथ मंजूर करने पर जिजो को लगा कि उसके टंकण की गति भी ठीक-ठाक हो गयी है. अग्रिम भुगतान करने के लिए जिजो ने लैपटॉप रूपा के हाथ में दिया. निश्चित रकम ई-भुगतान के माध्यम से देने पर, ''कृपया एक घंटा इंतजार करें'' वाला संदेश पीले हाशिए वाले स्क्रीन पर काले अक्षरों में दिखाई दिया. तुरंत रूपा के मोबाइल पर भी संदेश आया. लैपटॉप बंद करने के लिए जिजो को देकर कमरे में इधर-उधर खड़े लोगों के हाथ थाम कर मृत्यु के कारण बताने लगी रूपा. मेहमान लोग सहानुभूति-संदेश लिखने के लिए जल्दबाजी कर रहे थे. जिजो के पहुंचने के बाद रूपा की दो दोस्त ही फ्लैट में थीं. वे तो लंबे समय से कोई अंग्रेजी पत्रिका पढ़ रही हैं. आलस को दूर करने का सबका अपना-अपना तरीका होता है!

न जाने क्यों जिजो को उस फ्लैट छोड़कर जाने का मन ही नहीं किया. उसकी यह सोच थी कि निस्सहाय तीन स्त्रियां मिलकर क्या करेंगी? वेनल को मेसेज कर दिया कि इंटरव्यू के लिए नहीं जा रहा हूं और उसके बाद उनकी मदद करने के लिए वहीं खड़ा रहा. मेसेज का कोई जवाब नहीं आया.

(क्रमशः)

आंतर भारती द्वारा आयोजित पूर्वी भारत दर्शन

- सोनी और सीमा

आंतर भारती द्वारा संचालित रमामाता आंबेडकर अध्यापिका विद्यालय औराद शहाजानी जिला लातूर महाराष्ट्र से १३ अप्रैल से २९ अप्रैल तक की यात्रा का वर्णन.

१३ अप्रैल की प्रातः ९ शिविरार्थिनी तथा एक प्राध्यापक औराद शहाजानी से भालकी बस से गए. वहाँ से ट्रेन द्वारा हैदराबाद नरेन्द्र भवन में ठहरे. नित्यकर्म, नाष्टा करके हैदाराबाद दर्शन को गए. रामोजी फिल्म सिटी, बिरला मंदिर देखा. दूसरे दिन कलकत्ता के लिए रवाना हुए. हावडा स्टेशन पहुंचने तक कर्नाटक आन्ध्रप्रदेश, उडीसा, पश्चिम बंगाल राज्यों से गुजरे, हावडा में श्री शर्माजी की सहायता से पहली बार दैनंदिन यत्त में शामिल हुए. १६ ता. को अगले दिन कलकत्ता दर्शन के लिए टाटा सुमो गाडी से गए. प्रसिद्ध हावडा ब्रिज कालाघाट मंदिर १८५८ में निर्मित रानी विक्टोरिया मेमोरियल म्यूजियम देखा तथा तारामंडल जिसमें पृथ्वी आकाश तारेनक्षत्रों की स्थिति देखी. वहाँ से साइन्स सिटी गए जहाँ भौतिक, रासायनिक जीवनशास्त्र आदि के अनेक चित्र देखे व प्रयोग स्वयं करके देखे, यादगार स्वरूप फोटो खींचे. वापस आर्य समाज में पहुंचे वहाँ सब को दिनभर के कार्यकलाप की चर्चा व अगले दिन की सूचनाएँ दी गई.

१८ अप्रैल रामकृष्ण मिशन, बेलूर मठ. जहाँ स्वामी विवेकानंद के जीवन चित्र थे. श्री रामकृष्ण ने इसी दक्षिणेश्वर में १६ वर्ष निवास किया था. वहाँ विभिन्न मूर्तियां देखी. ब्रह्मानन्द मंदिर की दक्षिणेश्वर नदी देखी. वहाँ खरीदी की अगले दिन शाम को ५ बजे गाडी से न्यू जलपाई गुडी की यात्रा शुरू हुई. वहाँ से (आसाम का दार्जलिंग शिविर स्थल का सात किलोमीटर का प्रवास चाय के बागों में से था. हरियाली और शीतलता का राज्य था. घरों की रचना अलग थी. ऊपर पहुंचने पर बादल नीचे दिखते थे. वहाँ बुद्ध मंदिर चिडिया घर व शिवलिंग मंदिर देखा. वर्षा शुरू हो गई. हमने ट्रेवल्स गाडी की थी उसमें बैठ कर शाम को दानापुर, सिलीगुडी, बाबा लोकनाथ मिशन मंदिर देखा रात को स्टेशन पर कमरा लेकर रात को विश्राम किया. प्रातः साढेतीन बजे की ट्रेन से न्यू कोच बिहार पहुंचे वहाँ मुन्सीपारा शिविर बास में गए. वातावरण रम्य था. वर्धा से तीन कन्याएँ तथा हम इस तरह हमारा महाराष्ट्र का ग्रुप बन गया.

शिविर में १४ राज्यों से शिविरार्थी आए थे. परिचय सत्र हुआ राज्यों के अनुसार

गट बनाए गए. प्रतिदिन ५ बजे उठकर, ५.३० बजे प्रार्थना, व्यायाम, ६.३० बजे ध्वजारोहण, एक घंटा श्रमदान, फिर स्नानादि, नाष्टा और दस बजे प्रथम सत्र जिसमें नई भाषा सीखे. बारह बजे भोजन के बाद २.३० बजे द्वितीय सत्र हर सत्र की शुरूआत जोशभरे युवा गीत से होती थी. विभिन्न विषयों पर गटों में चर्चा फिर चार बजे चाय और भाईजी द्वारा साधन विरहित मैदानी सामूहिक खेल होते थे. ६ बजे श्री सुब्बारावजी द्वारा सर्व धर्म प्रार्थना और नृत्य का अभ्यास हुआ. फिर तुरन्त सांस्कृतिक कार्यक्रम, विभिन्न प्रदेशों के गीत आदि और अन्त में ९ बजे भोजन और विश्रान्ती.

२९ ता. को प्रतिदिन का क्रम प्रथम सत्र में शिविराथियोने अभिवादन के अलग - २ प्रकार अलग २ भाषाओं में सीखे. मणीपुर का ''करूमजली,'' बंगाली में ममोश्वर, पंजाबी सतश्री अकाल, वडक्कम इत्यादि. राष्ट्रध्वज तिरंगे की जानकारी, बांधने का तरीका इत्यादि नियम बताए गए. श्रमदान और महत्व तालाब कीमिट्टी निकाली. सत्रों के टॅलेन्ट इंचार्ज सिनिअर स्कील ट्रेनिंग, वर्कशॉप होते थे. दोपहर के सत्र में भाईजी तथा अन्य गणमान्यों के प्रबोधनात्मक भाषण होते थे. अंतिम दिन जनजागृति रेली हुई. शाम को झंडा उतारा गया. आदर से तह करके सुरक्षित रखा गया.

शिविर के अन्तिम दिन भोजन बनाने की तथा परोसने की जिम्मेदारी थी सबने सहकार्य किया, शाम का जुलूस अपने अपने गट में अपने प्रदेश की वेशभूषा पहनकर हुआ. उनमें भारत की सन्तान चौदह भाषाओं में गीतनृत्य से समापन हुआ.

१५ ता. को पडोसी देश भूतान का मुंशीपाय से स्कूल बस और ऑटो लेकर सब शिविरार्थी भाईजी तथा सहकारी शिक्षक, राठीजी, गुप्ताजी तथा सहकारी शिक्षक, हरिविश्वास जी, नरेन्द्र भाई, आदि गए. दो बजे भूटान में घुसे बौद्ध मंदिर मीनिस्टरी गए फोटो खीचे. बाजार गए. वापिस आने पर स्थानिक लोग जमा हुए ओर विभिन्न प्रदेशों से आए युवकों युवति से मिले. प्रबोधन हुआ. सर्टिफिकेट दिए गए. भूटान से वापस आकर ट्रेन से न्यू कोच विहार स्टेशन आए. रिजर्वेशन दो महीने पहले से किया हुआ था. से हावडा स्टेशन से हैदराबाद आए. वहाँ से उदगीर आए. श्यामलाल शिक्षण संस्था में रूके व बस से औराद वापिस आए.

शिविर की विशेषता यह थी कि विभिन्न प्रदेश के लाग रहन सहन वेशभूषा भाषा तथा भोजन का आनंद लिया. सुपारी के पेड. केले के झाड देखे, श्रमदान के प्रतिश्रद्धा निर्माण हुई यात्रा के अनुभव तो निराले थे ही. समूह में रहने का आनंद आया नियोजन अच्छा था. किसी भी तरह की असुविधा नहीं हुई.

हिन्दी प्रस्तुति - डॉ.मधुश्री आर्य

समाचार भारती-३

अब महिलाएँ अस्मिता की लड़ाई लडें - राजूरा, जि.अमरावती

गतांकों में कुछ परिसंवादों का विवरण छपा था, शेष निम्न प्रकार -

परिसंवाद - ४

और कितनी आरूषी - निर्भया

प्रा.जयश्री कापसे - गावंडे : महिला कहाँ सुरक्षित हैं इसका अंदाजा नहीं लगता निर्भया तथा आरुषी का अभ्यास करते समय सर्वप्रथम हमे ंअपने अन्दर झांक कर देखना होगा. महिलाओं को देखते समय केवल उनके शरीर की तरफ ही क्यों देखा जाता है. शारीरिक सबलता निर्माण करना आना चाहिए. शिक्षण से संस्कारित करना चला गया है. संवेदनशीलता खतम हो गई है. अपने आजू बाजू में होनेवाले अत्याचारों की चर्चा करनी चाहिए. घर में छुपे हुए अन्याय को सामने लाना चाहिए. किसी भी गल्ती के लिए गंभीर सजा मिलती तो गुनाह करते समय आदमी घबराता था. मानसिकता में परिवर्तन करने के लिए शिक्षा और संस्कार की आवश्यकता है.

संध्या इंगोले : शिक्षण में लडकों से लडकियां आगे हैं. फिर भी हर दम चूल और मूल-घर गृहस्थी में ही फंसा कर रखते हैं. लडकी है ऐसी अपने में कमी न्यूनगंड लाना बन्द करना चाहिए. हम जीजामाता जैसे बनेंगे तो शिवाजी बना सकेंगे.

रजिया सुल्तान : पुरुषों की मानसिकता इतनी गिरी हुई है तो मनोरूग्ण औरतें भी उन्हें काफी नहीं हैं. बलात्कार से पीड़ित लड़कियों को अब समाजाआधार देने के लिए आगे बढ रहा है यह अच्छी बात है.

कभी बाहर न जाने वाली औरतों पर भी बलात्कार होता है. स्त्री कहीं भी सुरक्षित नहीं है. हमारा कोई कुछ भी बिगाड नहीं सकता ऐसी धारणा पुरूषों की हो गई है क्योंकि वैसी परिस्थिति में भी उनकी जमानत देनेवाले हैं.

संचालन : बादल बेले　　　　　　　　आभार : रूपेश चिडे

समारोप तथा ठहराव

सम्मेलनाध्यक्ष उषाकिरण आत्राम, उद्घाटक अमर हबीब, स्वागताध्यक्ष वंदना चटप, भूतपर्व आमदार ॲड.एकनाथराव साळवे, प्रा.सुधा माल धूरे, नीलिमा

काळे, संध्या इंगोले, नगर पालिका के गटनेता प्राचार्य अनिल ठाकुरवार, बाजार समिति के सभापति प्रभाकरराव ढवस, मुख्य संयोजक विकास कुंभारे, संस्था की अध्यक्ष आशा लांडे.

इस अवसर पर ठराव लिए गए. उनका वाचन मुख्य संयोजक विकास कुंभारे ने किया.

ज्योति से ज्योतिबा होवें.

अमर हबीब : महिला सन्मान सम्मेलन का समारोप.

राजुरा ता. १८ : फुले के काल में ज्योतिबा खडे हुए. प्रत्येक काल में सावित्री के पीछे ज्योतिबा खडे ही हों ऐसी अपेक्षा न रखते हुए प्रत्येक ज्योति को ज्योतिबा होना पडेगा ऐसा मत प्रसिद्ध साहित्यिक अमर हबीब ने विचार व्यक्त किए. राजुरा में आयोजित दो दिन के महिला सम्मेलन के समारोपीय समारोह में बोले. उस समय विचारपीठ पर सम्मेलनाध्यक्ष उषा किरण आत्राम, स्वागताध्यक्ष वंदना चाटप, मुख्य संयोजक विकास कुंभारे, भूतपूर्व आमदार ॲड.एकनाथराव साळवे, प्राचार्य अनिल ठाकुरवार, प्रा.सुधा मालधूरे, नीलिमा काळे, संख्या इंगोले, प्रभाकर ढवस, आशा लांडे आदि मान्यवर उपस्थित थे.

हबीब बोले, प्रत्येक स्त्री के पास अपना अनुभव है. वह अनुभव व्यक्त होना चाहिए. उसके लिए उन्हें लिखना चाहिए. पीढियों पर संस्कार डालने के लिए जीवन समर्पित करना होगा. नये युग में बच्चे बनाने का आव्हान महिलाओं के सामने हैं. उसके लिए ऐसे विचारशील सम्मेलनों की अत्याधिक आवश्यकता है.

महिलाओं का सन्मान करने वाले सम्मेलन के सम्मेलनाध्यक्ष पद पर मुझे चुनने के लिए कृतज्ञता व्यक्त करके सम्मेलनाध्यक्ष उषा किरण आत्राम बोली सहकार्य से ऐतिहासिक तथा महत्वपूर्ण आदर्श सम्मेलन राजूर में सम्पन्न हुआ. स्त्रियों को सक्षम करनेवाले विचार तथा बल सम्मेलन से मिले शब्दों के अर्थ स्त्रियों ने समझना चाहिए. अंधेरा मिटाने को समय लगता है वैसे ही विचार बदलने में भी समय लगेगा. केवल हमें आशावादी होना चाहिए. उस बदलाव की राह देखनी होगी.

इस समय मुख्य संयोजक विकास कुंभारे ने महिला सक्षमीकरण के दस प्रस्ताव प्रस्तुत किए. इसमें प्रत्येक स्टेशन में महिला सुरक्षा समिति को दृढ करना चाहिए. तथा उसमें सब स्तरों की महिलाओं का समावेश करना चाहिए, प्राथमिक शिक्षण से आत्म संरक्षण के पाठ व मैदानी खेल आवश्यक करने चाहिए. ग्रामीण भाग के बसस्थानक तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों पर स्त्रियों

के प्रसाधन की अलग व्यवस्था करना, जिस जिले में शराब बंदी करने की मांग आई है तुरन्त बंदी करें, महिलाओं की सहायतार्थ विशेष महिला हेल्प लाइन नंबर शुरू करें, प्रत्येक सार्वजनिक स्थानों पर सीसिटीव्ही कॅमरे लगाए जाएं, पाठशाला कॉलेज में कन्या सुरक्षा दल की स्थापना करें, इस दलको एफ.आय.आर, दाखल करने का अधिकार दिया जाए. महिला अन्याय, अत्याचार के केस दो महीनों में परिणाम निकालने की दृष्टि से फास्ट ट्रॅक कोर्ट चलावें ऐसा प्रस्ताव पास करके मा.मुख्यमंत्री के पास भेजे गए.

इस समारोप के सत्र का संचालन बंडू बोठे तो तथा आभार प्रदर्शन ॲड.राजेन्द्र जेणेकर ने किया. **हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य**

समाचार भारती-४

डा.नीलिमा आन्तर भारती उज्जैन की अध्यक्ष बनीं

दि. ११ मई २०१४ उज्जैन - मध्यप्रदेश की प्रसिद्ध तीर्थनगरी उज्जैन में गत तीस - पैंतीस वर्षों से आंतर भारती का कार्य हो रहा है. अनेक प्रकार की असुविधाओं के बीच भी हिम्मत से कार्य कर अपने जीवन्त होने का परिचय यहाँ के कार्यकर्ताओं ने दिया और श्री कृष्ण मंगलसिंह कुलश्रेष्ठ जी के नेतृत्व में आन्तर भारती सदा गतिमान रही. नए नए लोग आते गए और कारवां बढता गया. कालान्तर में श्रीमती पुष्पा चौरसिया भी न केवल आन्तर भारती से जुडीं बल्कि सक्रिय काम करनेवाली बनीं और इस तरह एक दिन वे आन्तर भारती की अध्यक्ष बन गईं. और कार्य निरन्तर गतिमान रहा पिछले कई वर्षों से यहाँ आन्तरभारती शिक्षक प्रेरणा प्रबोधन के शिविर निरन्तर होते रहे हैं और इस वर्ष एक सूचना एवं संचार औद्योगिकी की आन्तर भारती और भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा आयोजित कार्यशाला के प्रसंग पर आन्तरभारती के विश्वस्त सचिव श्री सदाविजय आर्य की उपस्थिति में आन्तर भारती के युवा कार्यकर्ताओं की एक बैठक आयोजित हुई. जिसमें सर्वसम्मति से श्रीमती पुष्पा चौरसिया जी ने डॉ. नीलिमा महाडिक का नाम अध्यक्षपद के लिए सुझाया और उपस्थित सभी युवाओं ने करतल ध्वनि के साथ इसका अनुमोदन किया. और इस युवा अध्यक्ष को डॉ. कृष्णमंगल सिंह कुलश्रेष्ठ जीने आशीर्वाद के साथ साथ आन्तर भारती के लिए किसी बात की कमी नहीं पडने दी जाएगी ऐसा कहा. श्री सदाविजय आर्य तथा डॉ.सी.जयशंकर बाबू आंतर भारती मासिक के कार्यकारी संपादक ने भी अपने विचार व्यक्त किए.

समाचार भारती-५

किनवट में : छुट्टियों में ज्ञानार्जन

''तालुका'' विज्ञान व तंत्रज्ञान केन्द्र, किनवट (महाराष्ट्र) में दिनांक १९ मई से ३१ मई २०१४ के दरम्यान छुट्टियों में ज्ञानार्जन शिविर का आयोजन किया गया.

भारत जोडो युवा अकादमी द्वारा संचालित तालुका विज्ञान व तंत्र केन्द्र पिछले चार वर्षों से गर्मियों में ''सुट्टीत ज्ञानाशी गट्टी'' शिविर का आयोजन करते हैं. कक्षा ५ से १० वीं के विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के दृष्टिकोण से विविध उपक्रम इस शिविर में किए जाते हैं. उनमें वाचन कक्ष में विज्ञान, खगोल शास्त्र, संस्कारक्षम, कथा, पर्यावरण, प्रेरणादाई व्यक्तियों की कथा, छोटे बच्चों की कहानी इत्यादि, एक हजार से अधिक पुस्तकों का खजाना उपलब्ध होता है. छंद वर्ग में मूर्तिकला, चित्रकला, कॅलीग्राफी, गीतगायन इत्यादि कलाएँ सिखवाई जाती हैं. खेल खेल में विज्ञान इस सत्र में घरेलू साधनों का उपयोग करके वैज्ञानिक संकल्पना समझने संबंधी मार्गदर्शन तथा प्रशिक्षण देते हैं. साथ ही टी.व्ही. की कक्षा में डिस्कवरी नेशनल जिओग्राफी, हिस्ट्री चेनल के माध्यम से नया ज्ञान मिलने की सुविधा रहेगी. दसवीं तथा बारहवीं के बाद क्या? इसके बारे में विशेष मार्गदर्शन इंटरनेट का प्रयोग इस विषय पर विशेषज्ञ का सत्र भी लिया जानेवाला है.

गर्मियों की छुट्टियों में ज्ञान तथा मनोरंजन, इंटरनेट की जानकारी, वाचनीय पुस्तकें इत्यादि ज्ञानवर्धक उपक्रम हंसते खेलते मनोरंजक तरीके से सिखाए जानेवाले इस शिविर में सहभागी होने के लिए आयु १२ वर्ष से १८ वर्ष तक के लडके व लडकियों ने साने गुरुजी रूग्णालय, किनवट व तालुका विज्ञान व तंत्रज्ञान केन्द्र किनवट से संपर्क करते. ऐसा आयोजन संस्था के अध्यक्ष श्री डॉ.अशोक बेलखोडे, मराठी विज्ञान परिषद, किनवघट के उपाध्यक्ष अभि.प्रशांत ठमके, प्रामहेश वेटकर, कार्यवाह पा.डी.पी.चांदल, महेन्द्र नरवाडे, कोषाध्यक्ष अरूणकुमार वतने ने किया है.

देखें पृ. ३६ **- हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य**

समाचार भारती-६

गोइन्का पुरस्कार समारोह एवं सम्मान समारोह संपन्न

जैन ग्रुप ऑफ इंस्टिट्यूशन्स के चेयरमैर डॉ.चेनराज रॉयचंद जी की अध्यक्षता में गुलबर्गा के साहित्यकार कमला गोइन्का फाऊण्डेशन द्वारा घोषित इक्कीस हजार राशि का ''पिताश्री गोपीराम गोइन्का हिन्दी कन्नड अनुवाद पुरस्कार'' से डॉ.काशीनाथ अंबलगे जी को उनकी अनुसृजित कृति ''सुमित्रानंदन पंत अवरा कवितेगळू'' के लिए पुरस्कृत किया गया.

संग-संग ''गोइन्का कन्नड साहित्य सम्मान'' से धारवाड की सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं कर्नाटक साहित्य अकादमी की नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रो.मालती पट्टणशेट्टी जी को नवाजा गया. कर्नाटक के वरिष्ठ हिन्दी सेवी श्री रंगनाथराव राघवेन्द्र निडगुंदि ओ को ''गोइन्का हिन्दी साहित्य सम्मान'' से सम्मानित किया गया. इसी अवसर पर साहित्येतर क्षेत्र के सम्मान ''दक्षिण ध्वजधारी सम्मान'' से कर्नाटक की सिरमौर प्रतिष्ठित समाज-सेवा धर्मस्थला की श्रीमती हेमावती वी. हेगडे जी को सम्मानित किया गया.

पुरस्कार समारोह दिनांक ६ अप्रैल को 'भारतीय विद्याभवन' बेंगलुरू में आयोजित था. इस समारोह के मुख्य अतिथि कार्पोरेशन बँक (मेंगलुरु) के सहायक महाप्रबंधक डॉ.जयन्ती प्रसाद नॉटियाल जी थे. समारोह का संचालन डॉ.आदित्य शुक्लजी ने किया.

पुरस्कार समारोह के अंत में एक अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन का भी आयोजन किया गया. जिसमें कवि सम्राट श्री आशकरण अटल जी के सम-संग श्री सुभाष काबरा, श्री श्याम गोइन्का, श्री मुकेश गौतम, पूरण पंकज तथा बेंगलूर के ख्याति प्राप्त कवि डॉ.आदित्य शुक्ला ने अपनी कविताओं से बेंगलुरू के साहित्य-रसिकों को मंत्र-मुग्ध किया.

विशेष आलेख-२

मनुष्य बनानेवाला मनुष्य - यदुनाथ थत्ते

- मधु नाशिककर

मेरे स्वप्नों का सहोदर मुझे याद आता है सौराष्ट्र का गडरिया जैसा कच्छ से कर्नाटक तक अपनी भेडों के झुंड को चराता फिरता है, वैसे ही ये थे. ऐसे ही यदुनाथ जी की जीवनशैली थी. यह बाबा आमटे ने अपनी कविता में वर्णित की. साने गुरूजी के परिश्रमी बच्चे ऐसा उल्लेख करते समय जो धडपड साने गुरुजी को अभिप्रेत थी यह धडपड यदुनाथजी में अधिकता से थी. यदुनाथ जी येवले में आपटे गुरुजी की शाला में जब सीखते थे वहाँ साने गुरुजी बहुत बार आते और बच्चों को देशभक्तों तथा दूसरी अनेक सुन्दर कहानियां बताते थे. ऐसा ही एक बार साने गुरुजी ने बच्चों को क्रांतिकारी भगत सिंह की कहानी सुनाई यदुनाथजी इस कथा में इतने मस्त हो गए कि उन्हें दूसरा कुछ सूझा नहीं रात को नींद भी नहीं आई और दूसरे दिन गृहपाठ न करते हुए शाला में गए. आपटे गुरुजी को आश्चर्य हुआ. उन्होंने यदुनाथ जी को बाद में मिलने कहा. शाला समाप्त होने के बाद यदुनाथ जी सीधा गुरुजी के पास जाकर खडे होकर कहने लगे, ''कल साने गुरूजी ने जो भगतसिंह जी की कहानी सुनाई बाद मुझे अभ्यास करने का सूझा नहीं मुझे भी देश के लिए कुछ करने की इच्छा है.'' तब आपटे गुरुजी ने कहा पहले शिक्षण पूरा करो फिर मैं ही तुम्हें स्वतंत्रता आंदोलन में बुला लूंगा. और यदुनाथ जी ने यह बात मान ली और अपना शालेय शिक्षण पूरा किया. आगे पूना जाकर कॉलेज में सीखते समय राष्ट्र सेवादल के स्थापना दिन से शाखा में जाने लगे. बाद में बी.एस.सी.पास करने के बाद एक वर्ष नौकरी की और बाद में साने गुरुजी की इच्छा के अनुसार सारा समय देश सेवा करने का निश्चय किया.

१९४८ में जब साने गुरुजी ''साधना'' साप्ताहिक शुरु की तब से अर्थात शुरू से यदुनाथ जी को सहायता के लिए मुंबई ले गए. गुरूजी के साथ तथा गुरु जी जाने के बाद ऐसा लगभग ३५ वर्ष यदुनाथजी ने साधना की जिम्मेदारी अत्यन्त समर्थता से संभाली. साने गुरुजी के जैसा ही यदुनाथजी भी बच्चों से प्रेम करते थे और हर साल साधना का कुमार अंक प्रकाशित करते. छुट्टियों में बच्चों के शिबीर लेते थे.

साने गुरुजी ने आन्तर भारती की कल्पना की और साने गुरुजी को प्रिय आन्तर भारती के व्रतस्थ प्रचारक यदुनाथ जी भारत भर घूमे. साहित्य के दृष्टिकोण से केवल मराठी भाषा ही नहीं तो गुजराती, कन्नड भाषा और उनके साहित्य से उनके घनिष्ठ संबंध थे. सच कहें तो यदुनाथ जी का जीवन यह आन्तर भारती जीवन था.

यदुनाथ जी ने १५ वर्ष कथामाला के अध्यक्षपद को सुशोभित किया. इस काल में उन्होंने कथामाला को प्रेरक विचार और अनेक उपक्रम दिए. उसमें उनकी ''भावजागरण दिंडी'' (जुलूस) का विशेष उल्लेख करना आवश्यक होगा. जुलूस से सामाजजीवन शुद्ध हो, स्वच्छ हो शाला के विद्यार्थियों से सुसंवाद स्त्रियों से कल्याण की बातें, मंगल वांङ्गमय विक्री इत्यादि उपक्रम चलाए. और इस जुलूस का नया स्वरूप देकर प्रकाश भाई ने महाराष्ट्र मंगल यात्रा शुरू की उसको भी यदुनाथजी ने सहकार्य किया.

यदुनाथ जी के स्वभाव की विशेषता यह थी कि उनके संपर्क में आनेवाला प्रत्येक व्यक्ति उनका ही हो जाता. यदुनाथ जी युवा शक्ति के प्रेरणा स्थान थे. उन्होंने कइयों को लिखने का बोलने की प्रेरणा दी. परिश्रमी बच्चों के प्रतिनिधि बनकर उन्होंने कइयों को प्रभावी कार्यकर्ता बनाया. सुरेश द्वादशीवार के कहेनुसार ''छोटे बच्चे जैसे बेकार पडे खिलौने जमा करते हैं वैसा ही यदुनाथ जी उत्साह से जहाँ भी कोई विशेषता अच्छा गुण दिखा वह ढूंढते रहते थे. उनका पत्र व्यवहार भी जबरदस्त था. पत्रव्यवहार से व्यक्ति जोडना उनका निदिध्यास था. यदुनाथ जी के जाने के बाद उनको श्रद्धांजली देते हुए प्रा.ग.प्र.प्रधान ने कहा था - यदुनाथ थत्ते ने गांधी जी के बताये हुए अनासक्ति योग का जीवनभर आचरण किया. उन्होंने साधना के माध्यम से महाराष्ट्र के सार्वजनिक जीवन पर संस्कार किए. जीवन भर तपस्वी जैसा जीने वाले सह्याद्री जैसे मनुष्य का मुझे मेरे जीवन के पचास वर्ष तक साथ मिलीा यह मेरा सौभाग्य था.

यदुनाथ जी का जीवन चरित्र पढेंगे तो आज कथामाला के प्रत्येक कार्यकर्ता को लगेगा कि उनका साथ मिला होता तो कार्य को और अलग ही दिशा मिली होती, प्रेरणा मिली होती.

यदुनाथ जी की स्मृति को विनम्र अभिवादन.

हिन्दी प्रस्तुति : डॉ.मधुश्री आर्य

बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं मुक्त अभिव्यक्ति
कला, कौशल-विकास व राष्ट्रीय एकात्मता के लिए

अतुल एवं राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित

आंतर भारती आंतर्राष्ट्रीय बाल आनंद महोत्सव, अतुल (गुजरात)

में

दि. १३ नवम्बर से १७ नवम्बर २०१४

८ वर्ष से १२ वर्ष की आयु मर्यादा

१५ अगस्त १४ तक पंजीकरण करें

परिवार निवास

''जो बच्चों का करेगा मनोरंजन, जुडेंगे उसके नाते प्रभु से''

- साने गुरुजी

गुजरात के **बलसाड** जिले में ग्राम **अतुल** में
अतुल न्यास के अत्यंत रमणीय व सुनियोजित
परिसर में स्थित 'अतुल विद्यालय' में आयोजित

बाल महोत्सव

संपर्क

डॉ.एस.एन.सुब्बराव
निदेशक, राष्ट्रीय युवा योजना
२२१, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली - ११०००१,
दूरध्वनि - ०११२३२२२३२९
भ्रमण ध्वनि - ०९८१०३५०४०४
ई-मेल - nypindia@gmail.com

ले.क.ए.शेखर
प्राचार्य, अतुल विद्यालय,
अतुल ३९६०२० (गुजरात)
दूरध्वनि - ०२६३२-२३३७१७
भ्रमण ध्वनि - ०९८२४२५५४८०
ई-मेल al_sekaras@yahoo.com